धर्म की सीमाओं से परे दीपावली

विवेक शुक्ला
नई दिल्ली

पिछले वर्षों की तरह इस बार भी दिवाली पर राष्ट्रपति भवन को रोशनी से सजाया जाएगा। यह जब जगमगाता है, तो देखते ही बनता है। राष्ट्रपति भवन में रोशनी की यह परंपरा भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने शुरू की थी। उन्होंने ही सुनिश्चित किया था कि इसके परिसर में सभी प्रमुख भारतीय त्योहार मनाएं जाएं। प्रथम राष्ट्रपति द्वारा शुरू की गई इस समृद्ध परंपरा को उनके उत्तराधिकारियों ने भी जारी रखा। भारत के विविध समाज में दिवाली धार्मिक सीमाओं से परे हो गई है। गैर-हिंदू जैसे सिख, जैन, बौद्ध, मुस्लिम और ईसाई भी उत्सव में शामिल होते हैं, जो देश की एकता में विविधता की भावना को दर्शाता है। यहूदी धर्म, जो इजरायल से ज्यादा जुड़ा है, भारत में समृद्ध इतिहास रखता है। देश के विभिन्न हिस्सों में यहूदी समुदाय दिवाली मनाते हैं। छोटी दिवाली और दिवाली पर दिल्ली के हुमायूं रोड पर जुदा ह्याम सिनेगॉग के बाहर दीये जलाए जाते हैं। उत्तर भारत का एकमात्र सिनेगॉग होने के नाते, यह भारतीय यहूदी समुदाय की देश की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता में भागीदारी का प्रतीक है। रब्बी इजेकील इसाकल मलेकर, जो अपने परिवार और दोस्तों के साथ सिनेगॉग के बाहर दीये जलाते हैं, कहते हैं, "भारत में रहते हुए दिवाली से कैसे दूर रह सकते हैं? यह असंभव है। दिवाली प्रेम, भाईचारे और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का त्योहार है। हम यहूदी हैं, लेकिन भारत का भी हिस्सा हैं।"

ऐसा ही एक उदाहरण राष्ट्रीय राजधानी के सिविल लाइंस में ब्रदरहुड हाउस मिलता है। अपनी ईसाई पृष्ठभूमि के बावजूद, ब्रदरहुड हाउस को दिवाली पर रोशन किया जाता है। ब्रदर सोलोमन जॉर्ज कहते हैं, "दिवाली, ईद और क्रिसमस जैसे त्योहार अब धार्मिक सीमाओं से परे हो गए हैं। इन्हें सभी मनाते हैं। दिवाली अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है।" एसेंडेड क्राइस्ट का ब्रदरहुड 1877 में भारत में स्थापित हुआ, जिसके कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से मजबूत संबंध हैं। अब इसे दिल्ली ब्रदरहुड सोसायटी (डीबीएस) कहा जाता है। इसने दिल्ली में सेंट स्टीफंस कॉलेज, सेंट स्टीफंस अस्पताल और हरियाणा की दिल्ली-सोनीपत सीमा पर सेंट स्टीफंस कैम्ब्रिज स्कूल की स्थापना की है।

ब्रदर सोलोमन कहते हैं, " दिवाली का अर्थ बहुत व्यापक है। यह अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है। अंधकार जीवन के हर कोने में फैलता है, जबकि प्रकाश सीमित है। दिन से पहले और बाद में रात आती है, जो अंधकार की प्रधानता दिखाती है। यह प्रकाश का पर्व हमें भारत के पवित्र मूल्यों की याद दिलाता है। जरूरतमंदों की मदद करना, अंधकार पर प्रकाश चुनना, ज्ञान और बुद्धि का पीछा करना तथा सद्भावना और करुणा का स्रोत बने रहना।"

सिख दिवाली को बंदी छोड़ दिवस से जोड़कर देखते हैं। उस दिन 1619 में मुगल सम्राट जहांगीर की कैद से छठे सिख गुरु हरगोबिंद जी की रिहाई हुई थी। देशभर में सिख दिवाली पर अपने घर रोशन करते हैं। जैन दिवाली को अपने 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर के 527 ईसा पूर्व निर्वाण प्राप्त करने के दिन के रूप में मनाते हैं। उनके लिए यह आत्ममंथन, उपवास और ज्ञान की शाश्वत रोशनी का प्रतीक दीये जलाने का समय है। राजस्थान और गुजरात जैसे राज्यों में जैन मंदिरों को रोशनी से सजाया जाता है और भक्त विशेष पूजा करते हैं। लड्डू और बर्फी जैसी मिठाइयां बांटी जाती हैं और कई जैन अहिंसा और आत्मअनुशासन पर प्रवचनों के लिए मंदिर जाते हैं। मुंबई जैसे शहरों में जैन समुदाय सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं, जिनमें गैर-जैन भी शामिल होते हैं, जो अंतरधार्मिक सद्भाव बढ़ाते हैं।

गोल मस्जिद पर दीये

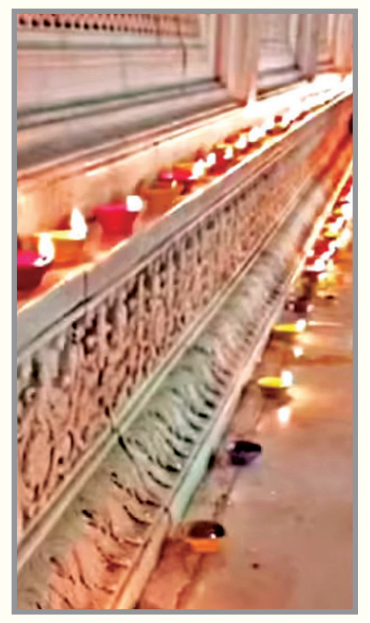

दीपोत्सव भारत की धरती का पर्व है। अगर ये बात न होती तो दिवाली पर निजामुद्धीन औलिया और मटका पीर की दरगाहों को रोशन करने की रिवायत न होती। इधर दिवाली वाले दिन सब मिलकर दिये जलाते हैं और रंगोली बनाते हैं। यकीन मानिए दिवाली पर इन फकीरों की दरगाहों की रोशनी अंधेरे पर बहुत भारी पड़ती है। अपने पिता की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, प्रमुख इस्लामिक विद्वान और अंतरधार्मिक आंदोलन के समर्थक इमाम उमर इलियासी राजधानी के कस्तूरबा गांधी मार्ग पर गोल मस्जिद के बाहर दीये जलाते हैं। यह परंपरा उनके पिता मौलाना जामेइल इलियासी ने शुरू की थी, जो ऑल इंडिया इमाम कॉन्फ्रेंस के संस्थापक थे। 1960 के दशक से यह दिवाली उत्सव का अभिन्न हिस्सा है। मुंबई के व्यस्त इलाकों में मुस्लिम परिवार हिंदू पड़ोसियों से मिठाइयां आदान-प्रदान करते हैं और बच्चों के साथ फुलझड़ियां जलाते हैं। बेशक भारत में गैर-हिंदुओं द्वारा दिवाली मनाना त्योहार के साझा सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक में विकास को रेखांकित करता है। यह सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देता है।

दीपावली की भीड़ में कहां गुम हो गया आम आदमी

अंजु अग्निहोत्री
लखनऊ

आज तुम, तो कल मैं, सत्रहवीं शताब्दी के शुरू में जब यह कहावत कही गई थी, तो कोई नहीं जानता था कि चार सौ साल बाद भी हालात जस के तस होंगे। तमाम कयासों के बाद दीपावली की जमकर खरीदारी धनतेरस पर रिकार्ड बिक्री का कयास तब जब लाखों की संख्या में बेरोजगार बाजार में जुटे हों, तो उनकी भीड़ देखकर कहना मुश्किल हो रहा था कि विकासशील राष्ट्र के ये वो नागरिक हैं। दरअसल समाज कोई भी हो, उसमें कई तरह के चेहरे देखने को मिलते हैं। वहीं दूसरा वर्ग वह आम आदमी है, जिसकी खुशियां छीनने के लिए तनख्वाह का समय पर न मिलना, बच्चों की फीस, रोजमर्रा के सामानों का जेब की पहुंच से दूर होना ही काफी है, लेकिन फिर भी हर कोई अपने-अपने तरीके से हर त्योहार मनाता ही है। फर्क सिर्फ 'पोम्प एंड शो' का है।

दरअसल सही मायनों में तो आम आदमी को त्योहारों की खुशी कम और उसके आने पर होने वाले खर्च का डर ज्यादा सताता है। आप माने या न मानें, लेकिन एक बार किसी आम आदमी के दिल के भीतर झांककर देखें। यह सच्चाई आपको खुद-ब-खुद इस हकीकत से रूबरू करा देगी। याद कीजिए बाजारों में कई-कई दिन घूमने और खरीदारी के बावजूद आपको क्या कोई ऐसा आदमी नजर आया। यकीनन नहीं, क्योंकि उसके लिए 'क्या मंगल क्या पीर, जिस दिन सोये देर तक भूखा रहे फकीर' वाली स्थिति है। वह न तो महंगी-महंगी मिठाई खरीद सकता है, न उसे एक दूसरे में बांटने का ख्याल ही अपने जहन में ला सकता है। खील खिलौने, गट्टे और पटाखों के दामों को सुनकर अपनी छोटी से जेब को देखता आम आदमी।

चुप बावली/कहां दीप और कहां दिवाली/स्याह स्वप्न/और रातें काली/बोली भारी दावे जारी/ खाली-खाली सब कुछ खाली/ उजियारी की कोरी बातें/ अंधकार की सौगातें/रोटी-वोटी प्यार-व्यार सब महज बतकही/ सब कुछ खोटी शेष नहीं अब कहीं अनकही/क्यों निस्तेज हो रही तेरी आंखें/कहां गुम हो रही तेरी लाली/चुप बावली/कहां दीप और/कहां दिवाली

सत्ता की सुविधा हेतु राजनैतिक पार्टियां कब तक हमें कभी धर्म के नाम पर, कभी जाति के नाम पर, कभी भाषा के नाम पर लड़ाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करती रहेगी? चुनावी उठापटक की मुहिम से लहूलुहान यह गणतंत्र धीमे-धीमे तमाशा बनता जा रहा है, बुनियादी सवालों के प्रति चिंतन कौन करे? सत्ता में आते ही अपनी जागीर समझने वाले सत्ता के सवार अपना वर्चस्व बरकरार रखने के लिए सरकारी धन का दुरुपयोग करते रहते हैं। आजादी के पांच दशक में हमारे साथ किया गया तमाशा अब धराशाही होना ही चाहिए। एक बार फिर दीपों के पर्व पर गणेश-लक्ष्मी की आराधना होगी। लक्ष्मी को अपने घर पर लाने के लिए तरह-तरह से पूजा अर्चना व मंत्रोच्चार होंगे। भगवान को भोग लगाया जाएगा, लेकिन एक तबका ऐसा भी होगा, जो इन सबसे अलग खुले आसमान के नीचे या फिर छप्पर के नीचे अगली सुबह का इंतजार कर रहा होगा। ऊंचे भवन में ऊंची दिवाली/उधर ढोल-ताशे, इधर पेट खाली/जगमग जगत का ये कैसा है माली?/कोई बताए ये कैसी दीवाली?/ न इधर कोई माली, न उधर कोई माली/रहस्य क्या बताए भीखू की थाली।

आरोग्य और आत्मबल के प्रतीक धनवंतरि

भगवान धनवंतरि का उल्लेख पुराण, महाभारत, हरिवंश और गरुड़ पुराण सहित अनेक ग्रंथों में मिलता है। समुद्र मंथन के समय 14 रत्नों के साथ चौदहवें क्रम में भगवान धनवंतरी भी प्रकट हुए थे। भगवान धनवंतरि की चार भुजाएं थीं। उनके एक हाथ में अमृत कलश, दूसरे में शंख, तीसरे में चक्र और चौथे हाथ में औषधि का पात्र था। धनवंतरि का शरीर दिव्य तेज से चमक रहा था। धनवंतरि ने अमृत कलश देवताओं को प्रदान किया और मानव समाज का औषधि पात्र के साथ अमूल्य ज्ञान दिया।

अशोक सूरी
बरेली

भारतीय संस्कृति में स्वास्थ्य को प्रमुख स्थान प्राप्त है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क विद्यमान रहता है एवं स्वस्थ मस्तिष्क में ही सुंदर विचार उत्पन्न होते हैं। हमारे शास्त्रों में कहा गया है, "शरीरमाध्यं खलु धर्म साधनम।" अर्थात शरीर ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधना का प्रथम सोपान है। स्वस्थ शरीर की अनुपस्थिति में उपर्युक्त कार्य नहीं हो सकते हैं। इस मानव शरीर की रक्षा के लिए भगवान ने जब अवतार लिया तो वे- भगवान धनवंतरि कहलाए। आयुर्वेद के आदिदेव एवं आरोग्य के अधिष्ठाता।

'भगवान धनवंतरि कहते हैं आयुर्वेदः नाम वेदोपवेदाः। जीवनस्य दीर्घिते तेन लभ्यते।।' अर्थात आयुर्वेद वह उपवेद है, जो जीवन को दीर्घ स्वस्थ और संतुलित रूप प्रदान करता है।

मानव शरीर पंच महाभूतों- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है। धनवंतरि ने शरीर में केवल तीन दोषों का प्रतिपादन किया। आयुर्वेद के अनुसार शरीर के सारे रोग जिन तीन दोषों के कारण उत्पन्न होते हैं, उनके नाम हैं- वात, पित्त और कफ। धनवंतरि के शिष्य सुश्रुत ने भगवान के उपदेशों को 'सुश्रुत संहिता' में संकलित किया है। यह ग्रंथ विश्व चिकित्सा विज्ञान एवं शल्य चिकित्सा का मुख्य ग्रंथ माना जाता है। धनवंतरी ने बताया कि ब्रह्मा द्वारा हमें प्रदत्त यह मान शरीर केवल देह नहीं है अपितु यह मन प्राण और आत्मा का समन्वित रूप है। यदि हमें कोई रोग नहीं है, तो इसका अर्थ स्वस्थ होना नहीं है। हमारा मन और हमारी आत्मा भी स्वस्थ होनी चाहिए, जिससे हमें कोई बुरे कार्य करने की प्रेरणा न मिले। उन्होंने कहा : ''समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रियः'' प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।'' अर्थात जब शरीर के दोष, धातु और मल संतुलित हों, अग्नि सम हो और मन तथा इन्द्रियां प्रसन्न हों, तभी मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला माना जाता है। भगवान धनवंतरि का प्राकट्य दिवस हम दीपावली से दो दिन पूर्व धनतेरस के दिन मनाते हैं। भारत सरकार ने इस दिवस को आयुर्वेद दिवस के रूप में भी मनाने की मान्यता दी है। आज हमारा जीवन भागदौड़ और असंतुलित खानपान से भरा हुआ है। आज की जीवनशैली में अखाद्य और असमय भोजन ने हमें चिकित्सकों को मुरीद बना दिया है। संतुलित भोजन एवं नियमित दिनचर्चा, औषधि एवं संयमित विचार भी हमें स्वस्थ एवं दीर्घायु बना सकते हैं। भगवान धनवंतरि, चिकित्सा विज्ञान के जनक तो हैं ही, साथ ही आरोग्य और आत्मबल के प्रतीक भी हैं। उनका दर्शन हमें सिखाता है कि स्वास्थ्य केवल औषधियों से ही नहीं, अपितु शुद्ध विचारों और सत्वगुणी जीवन से प्राप्त होता है।

पर्यावरण, विज्ञान और संस्कृति संग हो 2047 का सफर

रवि बिजारनिया
पीआरएसआई, देहरादून

भारत की पहचान उसकी हजारों वर्षों पुरानी संस्कृति और विरासत से है। भारत 2047 में स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा। जब हम 2047 तक विकास की ओर बढ़ें, तब यह जरूरी है कि हमारी संस्कृति और परंपराएं भी साथ चलें। भारत की सांस्कृतिक धरोहर को विश्व स्तर पर पहचान दिलाना भी जरूरी है। यह अवसर सिर्फ एक ऐतिहासिक पड़ाव नहीं, बल्कि एक नए भारत की कल्पना का प्रतीक होगा। ऐसा भारत जो आर्थिक रूप से मजबूत, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार हो। इस दिशा में जनसंपर्क (पब्लिक रिलेशन) की भूमिका बहुत अहम होगी। यह केवल सूचना देने का माध्यम नहीं, बल्कि सरकार और समाज के बीच भरोसे और संवाद का पुल है।

पर्यावरण के साथ संतुलन

- जलवायु परिवर्तन आज की सबसे बड़ी चुनौती है। भारत जैसे देश के लिए यह और भी महत्वपूर्ण है। हम स्वच्छ ऊर्जा, हरित विकास और टिकाऊ जीवनशैली को अपनाएं। इस बदलाव के लिए सिर्फ नीति बनाना काफी नहीं, बल्कि लोगों को इसके लिए जागरूक और प्रेरित करना जरूरी है। यहां जनता को जोड़ने और जिम्मेदारी का अहसास दिलाने में पब्लिक रिलेशन यानी पीआर एक उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकता है।

सरकार और जनता के बीच सेतु

- नीतियों की सफलता जनता की सहभागिता और भरोसे पर टिकी होती है। एक पारदर्शी संवाद से ही यह भरोसा कायम हो सकता है। जनसंपर्क वह माध्यम है, जिससे सरकार और नागरिकों के बीच स्पष्ट, सटीक और संवेदनशील संवाद हो सकता है, जिससे नीतियां धरातल पर उतरें।

एक समग्र सपना

- भारत 2047 का सपना सिर्फ आर्थिक विकास का नहीं है। यह सपना है एक ऐसे देश का है, जो संस्कृति से जुड़ा हो, प्रकृति के प्रति सजग हो और जनता की भागीदारी से मजबूत हो। अगर जनसंपर्क हर क्षेत्र- विज्ञान, पर्यावरण, संस्कृति, शासन और स्वास्थ्य में जिम्मेदारी से संवाद बनाएं रखें, तो निश्चित ही भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बन सकता है।

विज्ञान और तकनीक से आमजन को जोड़ना

- भारत ने विज्ञान और तकनीक में तेजी से तरक्की की है। जैसे- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल हेल्थ और स्पेस टेक्नोलॉजी। इन तकनीकों का सही उपयोग और जनता का इन पर विश्वास बनाना जरूरी है। जनसंपर्क की मदद से इन जटिल विषयों को सरल भाषा में लोगों तक पहुंचाया जा सकता है, ताकि वे इसका लाभ उठा सकें।